मन की अभिलाषा

अपने मन की मिट्टी में

बीज प्रेम का बोयें,

जीवन रूपी वट वृक्ष के

मीठे फल हम खाएँ,

जो बोए बीज करेले का

आम कहाँ से पाएँ,

जीवन की ढलती उम्र में

प्रेम छाँव बन जायें,

अपने इस छोटे जीवन में

विश्वास सभी का पाएँ,

जो प्रभु से हमको मिल गया

प्रसाद समझकर खाएँ,

जैसे पाँच अंगुलिया हाथ मे

ना एक बराबर होती,

हर इंसान की किस्मत भी

ना एक सरिसी होती,

चलो उठो ना समय गवांओ

सब जीवन के रँग भरलो,

अपनी सब अभिलाषाओं को

मेहनत से पूरा करलो,

गोपाल कृष्ण व्यास